JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

श्री मोहन परीख

ग्रामीण विकास के लिए साइंस टेकनालाजी पुरस्कार प्राप्तकर्ता– १९८४

आज इस शुभ अवसर पर उपस्थित होते हुए मुझे दो बात की खुशी है। इस अवार्ड के साथ जिस आदरणीय व्यक्तिका नाम जुडा हुआ है उनके पास बचपनमें रहने, खेलने का और उनका प्यार पाने का मुझे अवसर मिला है. तो उन्हें याद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है।

दूसरी बात यह है कि, जब मैंने ग्रामोद्योगों में तकनीकी बाबतों का अध्ययन शुरु किया उसके पहले इसी अवार्ड को प्रथम प्राप्त करने वाले आदरणीय स्व. सतीशबाबू थे, जिनके पास से हाथ कागज और दियासलाई बनाना आदि उद्योग हमने सीखे हैं। आ. श्री. जुगतरामभाई दवे उन्हें भी पहला बजाज अवार्ड रचनात्मक कार्य के लिये दिया गया था उन्हीं के साथ आदिवासी प्रदेश में हम कार्य करते हैं. ऐसे गुरुजनों के पदचिन्हों पर चल कर साइन्स अेन्ड टेक्नोलोजी विषय के बारे में मुझे अवार्ड दिया जाता है उसकी बुनियाद इन व्यक्तियों से ही पड़ी हुई है।

सन् 1947 में हमने देहात में बैठकर विज्ञान और टेक्नोलोजी के माध्यम से रचनात्मक कार्य करना शुरु किया। बाद में भूदानयज्ञ के द्वारा बांटी गई भूमि पर किस पद्धति से खेती की जाय, और उसके लिये मनुष्य शक्ति से चलनेवाले कृषि के औजार कैसे हों, यह काम सर्व सेवा संघ की ओर से मुझे सौंपा गया। तबसे इस कार्य को मैंने मेरा जीवनकार्य समझकर स्वीकार किया और पूरी भक्ति और शक्ति के साथ उसीमें तल्लीन हो गया। जैसे इस विषयका गहराईसे अध्ययन करता गया तो काफी नई चीजे सीखने को मिलीं। कृषि औजार का अध्ययन करते समय, भारत के अनुसंधान केंन्द्रों से किस दिशा में यह कार्य हो रहा है उसका कुछ अंदाजा आया। लेकिन कृषि औजार सुधार के लिये मेरे कोई सही मार्गदर्शक या गुरु कहना हो तो मैं किसानो ं को ही क हूंगा, जिनके द्वारा किसानों में आती हुई मुसीबत का मुझे खयाल आया। यह खयाल आने के बाद ही कृषि औजार में सुधार की दिशा स्पष्ट हुई और उसके लिये कार्यक्रम बन पाया।
साथ ही साथ कृषि कालेज आणंद के डॉ. अेम.डी.पटेल से समझने को मिला कि आज के मौजूदा कृषि औजार करीब 2000 या उससे भी ज्यादा सालों से चलते आये हैं, तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। आज देखते हैं कि शहरों और बड़े बड़े उद्योग और कलाकारखानों का विकास वैज्ञानिकों और टेकनिशियनों के ज्ञान के सहारे हो पाया है। लेकिन ऐसा कोई टेकनिशियन नहीं निकला जिसने भारत के बुनियादी व्यवसाय कृषि के लिये अपना ज्ञान प्रदान किया हो, और उसके छोटे मोटे औजारों में सुधार संशोधन का कार्य किया हो। यह बात सच है कि उद्योगों में वैज्ञानिकों को पैसे का आकर्षण देकर उनकी विद्या का लाभ उद्योग प्रेमायोंने उठा लिया है। वैसे कोई राष्ट्रप्रेमी या देहात प्रेमी नहीं निकला कि जो किसान और उनके व्यवसाय के लिये उनसे लाभ लेता। इस बात का मुझे अफसोस ही करना पड़ रहा है।

दूसरी ओर से यह भी समझ पाया कि देहात के इन्जीनियर – सुथार और लुहारके पुरखों के बनाये औजार आज दो हजार साल के बाद भी उतने ही उपयोगी और अनिवार्य हैं। तो उन देहाती कारीगरों के प्रति मेरा सर सादर झुकता है। आज के गतिशील जमानें में कई चीजों की डिजाइन दो – पांच सालों में पुरानी हो जाती है, लेकिन उन डिजाइनकारों ने जो औजार निर्माण किये हैं वे आज भी चल रहे हैं , यह उस डिजाइन में कितनी अहमियत है उसका सबूत है।

देहात में पड़ी हुई शक्तियों को जगाने का आज सवाल है. देहातों से बने भारत देश को आगे लाने का एक ही उपाय है कि आधुनिकतम विज्ञान का उपयोग करके देहात के प्रश्न सुलझाने के लिये उचित टेकनोलोजी हर प्रदेश के लिये ढूंढी जाय। इस दिशा में काम करनेवालों के लिये उत्तेजना बढ़ाकर बजाज अवार्ड ने प्रोत्साहन दिया है उसके लिये मैं अवार्ड देने वाली संस्था का आभारी हूं और उनका अभिवादन करता हूं । हम सब लोग जानते हैं कि कई सभ्यतायें – संस्कृतियां – आई और गई, लेकिन भारत के देहात की बुनियाद को कोई टस से मस नहीं कर पाया. ऐसी पक्की बुनियाद को विज्ञान के सहारे और ज्यादा मजबूत बनाना वैज्ञानिकों का कर्तव्य बन जाता है ।

जाहिर सेवा हमारा कार्य रहा है । उसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.) खादी कमीशन (के.वी.आइ.सी.) आदि की ओर से आर्थिक सहायता अवश्य मिली है। पर इस कार्य को उन संस्थाओं ने अपना कार्य मानकर आवश्यक उतनी दिलचस्पी नहीं बताई है। उनके कार्य में यदि उन्हें सफल परिणाम लाने हों तो, अपने ही विषय – उन्नत कृषि औजार, लोहारी, बढ़ईगिरि – आदि में देहात को आवश्यक वैसी उन्नति साधकर वे काफी काम कर सकते हैं। इस कार्य के लिये देहातियों के साथ बैठकर, उनके प्रश्न समझकर, उसे सुलझाने में मदद करने की वृत्ति अनिवार्य है. यदि वे ऐसा करते हैं तो देहातियों की ओर से भरपूर सहयोग उन्हें मिलेगा।

भारत में सी.अेस.आई.आर.के द्वारा चलती हुई कई नेशनल लेबोरेटरीज आज कार्य कर रही हैं। उसमें कार्य की विविधता भी काफी है। पर दिक्कत यह है कि विदेशी जानकारी (नो–हाउ) अपनाकर सेन्ट्रलाईज़्ड इन्डस्ट्रीज़ का ही आमतौर पर उन्होंने काम किया है। आज बड़े प्रेमसे उन्हें मेरा निमंत्रण है कि यदि ये अनुसंधान संस्थायें देहात के प्रश्नों का अध्ययन करके उसके विकास और नवनिर्माण कार्य में दिलचस्पी लेंगी तो उनके निष्णातों का लाभ देश को आगे बढ़ ाने में मिलता रहेगा। देशमें इतनी बड़ी तादाद में काम पड़ा है कि लेबोरेट्रीज़ में बैठकर समस्या ढूंढने की बजाय देहात में जाकर वे मौजूदा परिस्थिति का अध्ययन करके प्रश्नों का हल निकालेंगे तो भारतीय जनता का वे आर्शीवाद पा सकेंगे ।